कार्य निदेशालय

संख्या :– ईडी/डब्लू के एस/2016

दिनाँक– 04.02.2016

महाप्रबंधक,
सभी क्षेत्रीय रेलें एवं उत्पादन कारखाने.

विषयः– रेल परिसरों में सद्वाक्यों को प्रदर्शित करना।

संदर्भः–रेलवे बोर्ड का पत्र सं. हिन्दी– 2005/वि.I/10/5 दिनांक 17.5.05।

सद्वाक्य प्रेरणा के स्रोत हैं। इनसे सकारात्मक सोच बनती है जिससे सद्भाव बढ़ता है, कार्यों के प्रति रुचि पैदा होती है और उनकी गुणवत्ता भी बढ़ती है।

रेलवे बोर्ड ने कुछ चुने हुए सद्वाक्यों की एक लिस्ट (सलंग्न) भेजी है जिनमें से उपयुक्त वाक्य उचित स्थानों (रेल प्रतिष्ठानों, रेलवे स्टेशनों, प्रतीक्षालयों, विश्रामालयों आदि) पर प्रदर्शित किया जाना है।

सलंग्नक–यथोक्त

(अशोक कुमार मिश्र)
कार्यकारी निदेशक/कार्य

General Manager,
North Eastern Railway,
GM office,
Gorakhpur – 273 012.

2/3/2016 Untitled2.jpg

सं.हिंदी-2005/वि. I/10/5 17-5.05

महाप्रबंधक,
सभी क्षेत्रीय रेलें एवं उत्पादन कारखाने.

विषय :- रेल परिसरों में सूक्तियों/सद्‌वाक्यों को प्रदर्शित करना.

उपर्युक्त विषय पर माननीय रेल राज्य मंत्री जी को संबोधित श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट के श्री राम शर्मा आचार्य जी ने कुछ सद्‌वाक्यों को रेल प्रतिष्ठानों, रेलवे स्टेशनों, प्रतीक्षालयों और विश्रामालयों आदि में प्रदर्शित करने का अनुरोध किया है.

उल्लेखनीय है कि महापुरूषों के विचार हमेशा प्रेरणादायक रहे हैं. इस पत्र के साथ उनके सद्‌वाक्यों की एक प्रति संलग्न है.कृपया अपने विवेकानुसार इनमें से कतिपय वाक्य अपने कार्यालयों/स्टेशनों एवं अन्य रेल परिसरों आदि में उचित स्थान एवं सुसज्जित रूप में लगवाने पर विचार कर लें.

संलग्नक. यथोक्त

(पी. के. शर्मा)
सलाहकार (औ.सं.)

प्रतिलिपि: मुख्य राजभाषा अधिकारी, सभी क्षेत्रीय रेलें एवं उत्पादन कारखाने.

वेदमूर्ति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित युग निर्माण योजना के अधिकृत सद्वाक्य

१) दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं।
२) जिन्हें लम्बी जिन्दगी जीनी हो, वे बिना कड़ी भूख लगे कुछ भी न खाने की आदत डालें।
३) जिसने जीवन में स्नेह, सौजन्य का समुचित समावेश कर लिया सचमुच वही सबसे बड़ा कलाकार है।
४) विपरीत परिस्थितियों में भी जो ईमान, साहस और धैर्य को कायम रख सके, वस्तुतः वही सच्चा शूरवीर है।
५) कायर मृत्यु से पूर्व अनेकों बार मर चुकता है, जबकि बहादुर को मरने के दिन ही मरना पड़ता है।
६) ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है, जैसे कपड़ों को कीड़ा।
७) ईमानदार होने का अर्थ है- हजार मनकों में अलग चमकने वाला हीरा।
८) अपनी रोटी मिल-बाँटकर खाओ, ताकि तुम्हारे सभी भाई सुखी रह सकें।
९) जीवन का अर्थ है 'समय' जो जीवन से प्यार करते हों, वे आलस्य में समय न गँवायें।
१०) गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।
११) पाप अपने साथ रोग, शोक, पतन और संकट भी लेकर आता है।
१२) सार्थक और प्रभावी उपदेश वह है, जो वाणी से नहीं, अपने आचरण से प्रस्तुत किया जाता है।
१३) अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो।
१४) मनुष्य का जन्म तो सहज होता है, पर मनुष्यता उसे कठिन प्रयत्न से प्राप्त करनी पड़ती है।
१५) अनजान होना उतनी लज्जा की बात नहीं, जितनी सीखने के लिए तैयार न होना।
१६) असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
१७) देवता आशीर्वाद देने में तब गूँगे रहते हैं, जब हमारा हृदय उनकी वाणी सुनने में बहरा रहता है।
१८) सभ्यता का स्वरूप है- सादगी, अपने लिए कठोरता और दूसरों के लिए उदारता।
१९) योग्यता और परिस्थिति को ध्यान में न रखकर महत्वाकांक्षाएँ गढ़ने वाला, दुःखी रहता और उपहास सहता है।
२०) पढ़ने योग्य लिखा जाय, इससे लाख गुना बेहतर यह है कि लिखने योग्य किया जाय।
२१) दूसरों के साथ वैसी ही उदारता बरतो जैसी ईश्वर ने तुम्हारे साथ बरती है।
२२) बुद्धिमान वे हैं जो बोलने से पहले सोचते हैं, मूर्ख वे हैं, जो बोलते पहले और सोचते बाद में हैं।
२३) परमेश्वर का प्यार केवल सदाचारी और कर्तव्य परायणों के लिए सुरक्षित है।
२४) जो बच्चों को सिखाते हैं उन पर बड़े खुद अमल करें, तो यह संसार स्वर्ग बन जाए।
२५) सबसे बड़ा दीन दुर्बल वह है, जिसका अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं।
२६) अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाएँ हैं। उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है।
२७) मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियन्त्रणकर्ता और स्वामी है।
२८) आलस्य से बढ़ कर अधिक घातक और अधिक समीपवर्ती शत्रु दूसरा नहीं।
२९) आय से अधिक खर्च करने वाले तिरस्कार सहते और कष्ट भोगते हैं।
३०) किसी का सुधार उपहास से नहीं, उसे नये सिरे से सोचने और बदलने का अवसर देने से होता है।
३१) जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।
३२) सज्जन अमीरी में गरीब जैसे नम्र और गरीबी में अमीर जैसे उदार रहते हैं।
३३) कुकर्मी से बढ़कर अभागा कोई नहीं, क्योंकि विपत्ति में उसका कोई साथी नहीं रहता।
३४) बड़प्पन अमीरी में नहीं, ईमानदारी और सज्जनता में सन्निहित है।
३५) उन्हें मत सराहो, जिनने अनीतिपूर्वक सफलता पाई और सम्पत्ति कमाई।
३६) प्यार और सहकार से भरापूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।
३७) प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं- आवश्यकताएँ कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठायें।
३८) काम की अधिकता से नहीं, आदमी उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।
३९) जो अपनी सहायता आप करने को तत्पर हैं, ईश्वर केवल उन्हीं की सहायता करता है।
४०) अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, यदि इसमें सफल हो गये, तो हर काम में सफलता मिलेगी।
४१) सच्चरित्र और निःस्वार्थ लोकसेवी ही किसी राष्ट्र को ऊँचा उठा सकता है।
४२) घमण्डी के लिए कहीं कोई ईश्वर नहीं, ईर्ष्यालु का कोई पड़ौसी नहीं और क्रोधी का कोई मित्र नहीं।
४३) सद्गुणों की खाद और सच्चाई का पानी पाकर व्यक्तित्व का पौधा विकसित होता है।
४४) यदि दुनिया तुम्हारे कार्यों की प्रशंसा करती है, तो इसमें कुछ भी बुरा नहीं, खतरा तब है, जब तुम प्रशंसा पाने के लिए किसी काम को करते हो।

://mail.google.com/mail/u/0/?tab=wm#inbox/152a697f3bfc27e57\ ?ojector=1